International Journal of Information Movement Vol.2 Issue III (July 2017)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 93-96

रामचरितमानस में प्रतीक योजना

प्रमिला देवी
प्राध्यापिका
कन्या महाविद्यालय,
खरखौदा (सोनीपत)
E-mail: permila10478@gmail.com

गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' हिंदी साहित्य का सर्वोत्कृष्ट महाकाव्य माना जाता है, जीवन की वास्तविकताओं का विष पीकर उन्होंने 'मानस' द्वारा अमृत की धारा प्रवाहित की संवत् 1632 में रचित यह महाकाव्य सात काण्डों में विभाजित है । भक्ति मार्मिक प्रसंगविधान, चारित्रिक महत्ता , सांस्कृतिक गरिमा, सुंदर संवादयोजना, मार्मिक घटना–संघटन आदि के कारण हिंदी एवं विश्व साहित्य का अमर कोष है ।

इसमें तुलसी जी के प्रबंध, सौष्ठव, विलक्षण रचना कौशल, मनोहर वस्तु वर्णन, संवाद योजना, सुबोध भाषा, भाव व्यंजना, सुंदर अलंकार याजना, भावानुकूल छंद विधान एवं सशक्त प्रतीक योजना के दर्शन होते हैं ।

1.0 प्रतीक : अर्थ एवं स्वरूप :

''यह अंग्रेजी सिम्बल का पर्याय है। इसका प्रयोग किसी मूर्त, अमूर्त और गोचर अथवा इंद्रियातीत विषय का किसी अन्य मूर्त एवं इन्द्रियगोचर वस्तु द्वारा प्रतिविधान किए जाने के अर्थ में होता है । अतः प्रतीक योजना में सामान्यतः चार तत्वो की स्थिति होती है (1) परोक्ष एवं अप्रस्तुत कथन की शैली (2) अतींद्रिय विषय की इंद्रियगोचर व्याख्या (3) प्रस्तुत से भिन्नतर सूक्ष्मतर अर्थ की व्यंजना (4) प्रस्तुत कथन के स्थान पर केवल अप्रस्तुत का कथन।''[1]

साधारण तौर पर कहा जा सकता है कि ''प्रतीकों के माध्यम से किसी विषय का प्रतिविधान करना 'प्रतीकवाद' है ।

मनुष्य के सामाजिक और धार्मिक व्यवहार का अधिकांश प्रतीकात्मक होता है । प्रतीकीकरण मनुष्य का सहज स्वभाव है । प्रतीकों की दो विशेषताएं होती है । प्रतीक सदैव किसी न किसी मध्यस्थ प्रकार के व्यापार का प्रतिनिधि होता है । इसका आशय यह है कि सभी प्रतीकों में ऐसे अर्थ निहित होते हैं, जिनको केवल प्रत्यक्ष अनुभव के संदर्भ में नहीं जाना जा सकता । दूसरी यह कि प्रतीक शक्ति को घनीभूत कर देता है । मनुष्य का समस्त जीवन प्रतीकों से परिपूर्ण है।''[2] वस्तुतः मनुष्य मूलतः प्रतीकों के माध्यम से ही सोचता है, अमूर्त चिंतन अधिक विकसित स्तर का लक्षण है ।

साहित्य में प्रतीकवाद का उपयोग कई प्रकार से होता है । (1) सर्वजीववाद (2) रूपक (3) उपमा (4) चरित्रों को किसी भाव या विचार का विशेष प्रतिनिध बनाकर उसके माध्यम से भाव या विचार व्यक्त करना आदि । प्रतीक कई कार्य कर सकते हैं । (1) किसी विषय की व्याख्या करना (2) उसको स्वीकृत करना (3) पलायन का पथ प्रस्तुत करना (4) सुप्त या दमित अनुभूति को जाग्रत करना (5) अलंकरण या प्रदर्शन का साधन होना ।

रामचरितमानस में प्रयुक्त विविध प्रतीकः

'रामचरितमानस' प्रतीक योजना की दृष्टि से विलक्षण काव्य है । तुलसी क विराट व्यक्तित्व के समानुरूप उनका प्रतीक विधान का फलक भी विराट है । विपुल कल्पना शक्ति के स्वामी तुलसी के काव्य मे प्रतीकों की योजना स्वयं ही हो गई है । मानस की विविध कथाओं व पात्र की दृष्टि के

अंतर्गत उन्होंने आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक व उपमानगत प्रतोकों का अत्यंत सहज व स्वाभाविक प्रयोग किया है । 'मानस' के प्रतीकों को निम्न शीर्षकों में विवेचित किया जा सकता है ।

2.0 आध्यात्मिक प्रतीकः

'रामचरितमानस' ज्ञान, भक्ति एवं आध्यातम की त्रिवेणी है । आध्यात्मिक की पुनीत स्रोतस्विनी 'मानस' में आदि से अंत तक प्रवाहमान है । इस दृष्टि से इसकी प्रतीक योजना अत्यंत मार्मिक एवं सारगर्भित है । 'मानस' के नायक राम आत्मा के प्रतीक हैं, और नायिका सीता बुद्धि की प्रतीक है । दोनों का परिणय आत्मा और बुद्धि का मिलन है । राम के वन गमन का समाचार सुन सीता का अत्यंत व्याकुल हो जाना आत्मा के वियोग की आशंका में बुद्धि की अस्थिरता का प्रतीक है । मारीच मृगतृष्णा का प्रतीक है । तृष्णा से बुद्धि भ्रमित होकर लोभग्रस्त हो जाती है । पंचवटी में सोने के हिरण (मारीच) को देखकर सीता का लोभवश राम से यह कथन इसी का प्रतीकार्थ है–

''सुनहु देव रघुवीर कृपाला । एहि मृग करि अति सुंदर छाला

सत्य संध प्रभु बधि करिएहि । आनहु चर्म कहति वैदेही ।''[3]

रावण मोह व अनाचार का प्रतीक है । लक्ष्मण विवेक एवं संयम का प्रतीक है । विवेक का उल्लंघन कर देने पर बुद्धि (सीता) मोहग्रस्त हो जाती है और सीता भी रावण के चंगुल में फंस जाती है । हनुमान भक्ति के प्रतीक है । मोहाच्छादित बुद्धि को भक्ति ही उदघाटित करती है । हनुमान द्वारा सीता का पता लगाने में यही प्रतीकार्थ है । रावण का अनुज कुंभकर्ण अहंकार का प्रतीक है । अहंकार मोह का सहोदर है । अहंकार के आगमन से व्यक्ति का जीवन तंद्रिल हो जाता है । उसके विकास की संभावनाएं न्यून हो जाती है । कुंभकर्ण का छः महींने सुप्तावस्था में रहना यही दर्शाता है । अहंकार का पेट विशद् होता है । अत्यधिक भक्षण करने पर भी उसकी क्षुधाशांत नहीं होती । तुलसी का कथन है –

''महिष खाई करि मदिरा पाना, गर्जावज्राघात समाना ।''[4]

मेघनाद चंचल वृति का प्रतीक है । मोह (रावण) चंचलवृत्ति का जन्मदाता है । वृत्ति की अस्थिरता का शमन संयम से ही हो सकता है । संयम के प्रतीक लक्ष्मण द्वारा मेघनाद–वध में यही प्रतीकात्मकता अंतर्निहित है । अहंकार व चंचलता के निःशेष हो जाने पर मोह निर्बल हो जाता है । जिसे आत्मा का सात्विक तेज पूर्णतः समाप्त कर देता है । राम द्वारा रावण के वध की घटना इसी की प्रतीक है ।

3.0 पात्र योजनाः प्रतीक रूप :

'मानस' की पात्र योजना भी प्रतीकत्व से मुक्त है । 'मानस' के अधिकांश पात्र आदर्शवादिता, नैतिकता, सत्यता एवं सदाचार के प्रतीक हैं । तुलसी के राम विष्णु के अवतार है तथा सत्यता, शील व सदाचार के प्रतीक है । सीता आदर्श पत्नी, भरत एवं लक्ष्मण आदर्श भ्राता, कौशल्या, सुमित्रा आदर्श जननी, दशरथ आदर्श जनक, हनुमान आदर्श सेवक, सुग्रीव व विभीषण आदर्श मित्र के प्रतीक है । मंथरा कुटिलता की प्रतीक है तो कैकेयी चंचलता वृत्ति की प्रतीक है ।

4.0 मनौवैज्ञानिक प्रतीकः

'मानस' में कई पात्रों स्थितियों का चित्रण तुलसी ने मनोवैज्ञानिक धरातल पर किया है । इस दृष्टि से मंथरा ईर्ष्या की और कैकेयी कार्यशक्ति की प्रतीक है । मंथरा जब तक कैकेयी के अनुशासन में रही तब तक राम के प्रति कैकेयी के प्रेम में कोई अंतर नहीं आया । मंथरा की बातों में आकर कैकेयी ने दशरथ से भरत के राज्याभिषेक तथा राम को वन भेजने का वरदान मांगा, तब उसे वैधव्य दुःख के साथ पुत्रविरोध भी सहना पड़ा । चित्रकूट में अपने निंदनीय कार्य से लज्जित हो पश्चाताप की साक्षात मूर्ति ही बन जाती है ।

''लखी सियसहित सरल दोउ भाई, कुटिल रानी पछितानि अधाई।

अवनि जमहि जाचति कैकेयी, महि न बीचु विधिभीचु न देई।''[5]

रावण आदिम ऊर्जा का मनोवैज्ञानिक प्रतीक है । संपूर्ण विश्व पर साम्राज्य स्थापित करने का इच्छुक है । राम रावण युद्ध में राम द्वारा रावण के काटे गए शीश–समूह के बढ़ने ''काटत बढ़हि सीस समुदाई।''[6] आदि में भी मनोवैज्ञानिक प्रतीकात्मकता है । मनोविज्ञान के अनुसार दमन करने से ऐन्द्रिय लिप्सा शांत नहीं होती वरन रावण के सिरों की तरह बढ़ती जाती है ।

5.0 राजनीतिक प्रतीक:

राजनैतिक दृष्टि से भी मानस का प्रतीकात्मक वैशिष्ट्य तर्कसंगत है । रावण द्वारा सीता का अपहरण तुलसी युगीन विदेशियों द्वारा भारत की स्वतंत्रता के अपहरण का प्रतीक है । अशोक वृक्ष के नीचे नतमस्तक बैठी सीता परतंत्र भारतमाता की ही प्रतीक है ।

प्रासंगिक कथाओं में सन्निहित प्रतीक :

'रामचरितमानस' में नियोजित विभिन्न प्रासंगिक व गौण कथाओं का भी प्रतीक की दृष्टि से महत्त्व कम नहीं है । ताड़का वध, अहिल्या–उद्धार, परशुराम, शूर्पणखा व शबरी से संबंधित कथायें प्रतीकात्मक हैं । ताड़का दुष्प्रवृति या पाप का प्रतीक है । जिसे एक ही बाण से काल–कवलित कर राम मोक्ष प्रदान करते हैं ।

''एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा, दीन जानि तेहि निज पद दीन्हां।''[8]

अहिल्योद्धार की घटना भी प्रतीकात्मक है । अहल्या अर्थात् वह भूमि जिसमें हल न चलाया गया हो । राम के चरण स्पर्श से पाषाणी अहिल्या के उद्धार की घटना –

''परसत पद पावन सोक नसावन, प्रगट भई तप पुंज सही।''[9] यह प्रतीकार्थ ध्वनित करती है कि राम ने दक्षिण भारत की पथरीली भूमि को कृषि योग्य बनाया ।

राष्ट्रीयता की दृष्टि से परशुराम का गर्व–मोचन प्रसंग भी प्रतीकात्मक है । परशुराम जातिवादो संकीर्ण मनोवृति का प्रतीक है और राम राष्ट्रीय एकता के प्रतीक हैं । शिव का धनुष तोड़कर राम जातिवादी संकीर्ण मनोवृति का खंडन करते हैं तथा अपनी सुशीलता व विनम्रता से परशुराम को इस तरह अभिभूत कर देते हैं कि वे वैर भाव से मुक्त हो तपस्या हेतु प्रस्थान कर जाते हैं ।

''कहि जय जय जय रघुकुल केतू

भृगुपति गए बनहि तप हेतू ।।''[10]

इस प्रकार राम द्वारा परशुराम का गर्वमोचन जातिवादी संकीर्णता पर राष्ट्रीय एकता की विजय का प्रतीक है ।

शबरी और राम मिलन की प्रकरी कथा के प्रतीकार्थ में सामाजिक समानता का सिद्धांत समाविष्ट है । अछूतवर्ग की प्रतीक शबरी के कंदमूल आदर्श समाजवादी राजा के प्रतीक राम बड़े चाव से खाते हैं ।

''कंदमूल फूल सुरस अति दिए राम कहुं आनि

प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि ।।[11]

शूर्पणखा से संबद्ध कथा में शूर्पणखा कामवासना की प्रतीक है और लक्ष्मण आत्मसंयम के प्रतीक है । लक्ष्मण को विचलित करने में शूर्पणखा का सारा रूपजाल प्रभावहीन सिद्ध होता है । लक्ष्मण द्वारा उसके नाक–कान काटने में यही प्रतीकार्थ निहित है ।

''लछिमन अति लाघव सो नाक कान बिनु कीन्ही ।''[12]

6.0 संदर्भः

1– डॉ. नगेन्द्र (सं.) भारतीय साहित्य कोष, नैशनल पब्लि. हाऊस, नई दिल्ली पृ. 751

2– डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, धर्मवीर भारती (सं.) हिंदी साहित्य कोष, भाग–1, ज्ञानमंडल, वाराणसी, पृ. 399

2– रामचरितमानसः पृ. 421 अरण्यकाण्ड 27/4–5

4– वही पृ. 544 लंकाकाण्ड 64/1

5– वही पृ. 395 अयोध्याकाण्ड 252/5–6

6– वही पृ. 583 लंकाकाण्ड 102/2

7– वही पृ. 483 संदरकाण्ड 8–8

8– वही पृ. 251 बालकाण्ड 209–5–6

9– वही पृ. 157 बालकाण्ड 211/1

10– वही पृ. 290 वही 285/7

11– वही पृ. 434 अरण्यकाण्ड 34

12– वही पृ. 429 अरण्यकाण्ड 27